नगरीय समाजशास्त्र की प्रकृति

UG SEMESTER –III, Core Course 06- Urban Sociology

Dr. Utpal Kumar Chakraborty
Department of Sociology
ABM College, Jamshedpur

नगरीय समाजशास्त्र की प्रकृति

नगरीय समाशास्त्र की प्रकृति वैज्ञानिक मानी जाती है, क्योंकि इसका अध्ययन वैज्ञानिक तरीके से क्रमबद्ध एवं व्यवस्थित तरीके से किया जाता है। समाजशास्त्र की प्रकृति वैज्ञानिक क्यों है? इसे निम्नांकित आधार पर समझा जा सकता है।

1) वैज्ञानिक पद्वति का प्रयोग– नगरीय समाजशास्त्र के अध्ययन वैज्ञानिक पद्धतियों के आधार पर किये जाते हैं। तथ्यों का संकलन एवं स्पष्टीकरण तथा विभिन्न नियमों का अध्ययन वैज्ञानिक पद्धतियों जैसे–अवलोकन पद्धति, व्यक्तिगत जीवन अध्ययन पद्धति, सर्वेक्षण पद्धति, समाजमिति एवं प्रयोगात्मक पद्धति तथा वर्गीकरण एवं सारणीयन पद्धति द्वारा किया जाता है। जिससे अध्ययन में यथार्थ निष्कर्ष प्राप्त किया जा सके।

2) **सार्वभौमिक**—नगरीय समाजशास्त्र में सार्वभौमिकता का गुण पाया जाता है, क्योंकि इसके नियम सभी जगह व्याप्त है तथा सभी स्थानों में समान रूप से लागू किये जाते हैं। जैसे औद्योगीकरण तथा नगरीकरण से नगरों का विकास एवं विस्तार होता है तथा इससे आवास की समस्या एवं मलिन बस्तियों का निर्माण होता है।

3) सिद्वान्तों का पुनः परीक्षण सम्भव– नगरीय समाजशास्त्र में जिन सिद्धान्तों एवं तथ्यों का निर्माण किया जाता है। उनकी पुर्नपरीक्षा भी की जा सकती है, क्योंकि किसी भी सिद्वान्त या तथ्यों के निर्माण के पश्चात वैज्ञानिक पद्धतियों का उपयोग कर उन सिद्धान्तों की प्रमाणिकता को जानने के लिए उनकी पुनः सत्यता की परीक्षा करना सम्भव होता है।

4) भविष्यवाणी– नगरीय समाजशास्त्र के तथ्यों एवं सिद्धान्तों का निर्माण चूंकि वैज्ञानिक पद्धतियों का उपयोग करके किया जाता है, किन्तु इस समाजशास्त्र में भी भविष्य में होने वाले परिवर्तनों, विकास की गति एवं प्रगति की भविष्यवाणी वर्तमान परिस्थितियों के आधार पर पर की जा सकती है। जैसे अत्यधिक तेजी से बढ़ते हुए मलीन बस्तियों के दुष्परिणामों एवं दुष्प्रभावों का नगरों पर पडने वाले प्रभाव की भविष्यवाणी की जा सकती है।

5) यथार्थ निष्कर्ष पर आधारित– नगरीय समाजशास्त्र में समाजिक तथ्यों को उनके मौलिक रूप में प्रस्तुत किया जाता है। साथ ही प्राप्त तथ्यों के आधार पर सिद्धान्तों एवं नियमों का निर्माण किया जाता है।

उपरोक्त विवेचना से स्पष्ट होता है कि भौतिक विज्ञानों की तरह नगरीय समाजशास्त्र की प्रकृति पूर्णरूप से विज्ञान नहीं है, तथापि दिन–प्रतिदिन वैज्ञानिक पद्धतियों के प्रयोग से इसकी प्रकृति को अधिक से अधिक वैज्ञानिक बनाने का प्रयास किया जा रहा है।